बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'
कवि एवं लेखक
एम॰ए॰; बी॰एड॰; आई॰जी॰डी॰; पीजीडीजेएमसी

206, टाइप-2, आई॰ आई॰ टी॰, कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

## प्रेम बंधन

हाँ, अगर तुम मेरे साथ,
मेरी बहन को चलते हुए देख,
उसे मेरी प्रेमिका समझ जाते हो,
तो कोई बात नहीं,
रिश्तों की डोर में उलझ जाते हो,
तो कोई बात नहीं,
बहन प्रेम का धागा बांध,
प्रेम बंधन में बंधती है,
और प्रेमिका, प्रेम को ही बंधन मान,
प्रेम बंधन में बंधी रहती है
प्रेमिका में ही जब,
माँ, बहन और बेटी,
के गुण होते है,
तभी वो अच्छी पत्नी बनती है,
और अगर ये गुण नहीं है तो,
वो पत्नी तो आपकी रहेगी,
पर, प्रेमिका किसी और की होगी,
या प्रेमिका तो आपकी रहेगी,
पर, पत्नी किसी और की होगी ||

✹ बृजेन्द्र श्रीवास्तव "उत्कर्ष"